पद १६

(राग: खमाज - ताल: त्रिताल) स्वहित कर कीं विषयीं भुललासी, पहा रे गड्या।।धु.।। गुरुमाणिका शरण जा, नमन कर द्वय करा जोडुनि सुखकर, भवहर, प्रियतर, हितपर, निजधर, पुस रे गड्या।।१॥